दीपावली के शुभ अवसर पर

देवियो और सज्जनों सर्वप्रथम नतशिर वन्दना है, दीपावली के इस पुण्य पर्व पर आप सबको हार्दिक बधाई हो, लख लख बधाई। शुभ एवं मंगल कामनाएं । परमेश्वर कृपा करें। आज का यह मांगलिक दिवस सब के लिए शुभ, मंगल एवं कल्याणकारी हो। हे परमात्वदेव, हे परमेश्वर श्री राम, अपने नाम के पुण्य प्रताप से, अपने नाम के प्रकाश से, हमारे भीतर का अन्धकार दूर कर दें। कृपा कर हमारे ऊपर – परमात्मा कृपा कर तेरी कृपा की भीख मांगते हैं, हम सब तेरे दास हैं। दीपावली को पांच दिवसीय पर्व कहा जाता है। दीपावली वास्तव में आज है लेकिन इस पर्व का शभुारम्भ तो त्रयोदशी से है–**धनतेरस** इसे कहते हैं। वहां से इस पर्व का शुभारम्भ होता है। इस दिन धनवन्तरी जी महाराज औषधियों का भण्डार समुद्र से निकाल कर अवतरित हुए। उस दिन को धनतेरस कहा जाता है। औषधाचार्य आर्युवैदिक वैद्य इत्यादि उस दिन भव्य पूजन करते हैं औषधियों का भण्डार ले के आने का अर्थ हुआ अरोग्यता। यह दीपावली का जो पर्व है यह छोटा मोटा उत्सव नहीं है। इस में बहुत सी चीज़ें मिली होती हैं – सर्वप्रथम हमारा जीवन जो है हमारा यह देह, जो मिला हुआ है हम तो देह नहीं है, यह मिला हुआ देह जिस में हम निवास करते हैं उस की अरोग्यता से इस पर्व का शुभारम्भ होता है। तो मकान की भव्यता और मकान का सौन्दर्य जो है – देह की निरोगता पर निर्भर करता है। मकान किस मिट्टी संगमरमर इत्यादि से बना हुआ हो उस का सौन्दर्य इन चीज़ों पर निर्भर करता है कि इसे सजाया किस प्रकार से गया है। तो हमारा शरीर जो है देह जो है वह स्वस्थ होना चाहिए यहीं से इस पर्व का शुभारम्भ होता है।

अगला दिन **काली चौदस**–इस दिन भगवान् ने सोलहां हज़ार नारियों को नरकासुर से छुड़ा कर अपनी शरण में लिया था। नरकासुर वासना का प्रतीक है, अहं का प्रतीक है। मां ने जो देह दिया है, हमारे देह में समस्त प्रकार की वासनाएं हैं, वासना केवल काम वासना को नहीं कहा जाता, किसी को बड़े बनने की वासना होती है, किसी को यश मान की वासना होती है, धन की वासना हुआ करती है, किसी को अपनी प्रशन्सा सुनने की वासना होती है, किसी को अपना प्रदर्शन करने की वासना हुआ करती है, किसी को बहुत आगे बढ़ने की वासना हुआ करती है। अनेक प्रकार की वासनाएं हैं वासना अर्थात जो कुसंस्कार हमारे भीतर जन्म जन्मान्तरों से इकट्ठे हुए हैं इसी को वासना कहा जाता है। Any time expected – कभी भी वह वासना जो है उभर सकती है। परसों ही एक ऐसे वृद्ध का पत्र आया (अनेक वर्षों से जानता हूं स्वामी जी महाराज के समय से हैं) घर के हालात बहुत अच्छे नहीं हैं, रिटायर्ड हैं, घर में रोग है बहुत, पत्नी ठीक नहीं, पुत्री ठीक नहीं, बच्चों का व्यवहार भी बहुत ठीक नहीं। अन्त समय आ कर, उन्हें कुछ लिखने चस्का सा पड़ गया है, मन में आया कोई वासना बेचारे की छुपी हुई होगी।

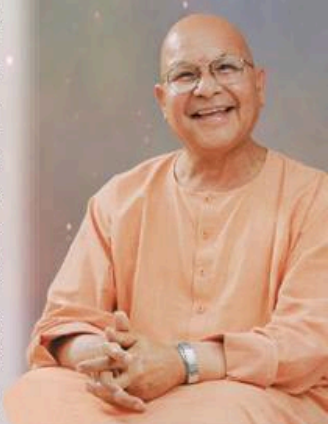

कहीं इस समय उदित हो गयी है। वासना यह कुसंस्कार छुपे हुए होते हैं यह भीतर पड़े हुए हैं अवसर ढूंढ रहे हैं कब प्रकट हो जायें। कल का दिन काली चौदस जिसे कहा जाता है अपनी वासनाओं एवं अहं को परमेश्वर के समर्पित करने का दिन था। इस के बाद तो भारी पवित्रता आ जाती है। शरीर निरोग हो गया अपने अपने अहं को परमेश्वर के अर्पित कर दें। अभी आप ने जो पढ़ा भक्ति प्रकाश में वह यह अहं नहीं। जो स्वामी जी ने वर्णन किया है वह वास्तविक अहं है। यह अहं, मिथ्या अभिमान है जिसको कर्तृत्व कहा जाता है। जिसको अहंकार कहा जाता है, उस की चर्चा चल रही है। उसे परमेश्वर के चरणों में सौंप दीजियेगा। जिस प्रकार भगवान् ने नर्कासुर को यमपुरी पहुंचा दिया था। अहं को भगवान् को समर्पित करने से, आपकी, हमारी वासनाओं को ये यमपुरी पहुंचा देते हैं।

आज बीच का दिन है। आज के दिन भगवान् श्री राम, लक्ष्मण जी महाराज सहित, मातेश्वरी सीता सहित अयोध्या में पधारे हैं। १४ वर्ष के वनवास के बाद राक्षसों का हनन करने के उपरान्त, आज अयोध्या पधारे हैं। अयोध्या बहुत सजाई जा चुकी है। आज दीपावली का पर्व वहां मनाया जा रहा है। अवध उसे कहते हैं, जहां, किसी का वध नहीं होता। जहां हिंसा नहीं होती, जहां युद्ध नहीं होता, उसे अयोध्या कहा जाता है। मानो हमारा अन्तःकरण जब सुसंस्कारों से इस प्रकार अलंकृत हो जाता है, कि उस में किसी के प्रति अहित की भावना नहीं रहती, उस अयोध्या या अवध में भगवान् अवतरित हो जाते हैं। वापिस लौट आते हैं, प्रकट हो जाते हैं। आज का दिन जो बिछुड़े हुए हैं, उनके मिलने का दिवस है। भरत जी महाराज को प्रेम का सागर कहा जाता है और भगवान् को कृपा का सागर कहा जाता है। आज दोनों सागर उमड़ रहे हैं। एक दूसरे को मिलने के लिये उतावले हैं। आज का दिवस उन दोनों के मिलने का दिवस है।

आज का दिन परमेश्वर से प्रार्थना करने का दिवस है। आज के दिन मां लक्ष्मी की, मां सरस्वती की पूजा की जाती है । मानों हमें धन की आवश्यकता पड़े तो धन के साथ साथ उस प्रज्ञा की भी आवश्यकता है, परमेश्वर यह धन हमारे बन्धन का कारण न बन जाये। धन किसी का नहीं है, आप हैं धन के धन किसी का नहीं है। धन चला जाता है आप रोते हैं। धन को कोई फर्क नहीं पड़ता। It is unilateral लगाव । धन आपसे प्रेम नहीं करता है। आप धन के प्रति आसक्त हैं। धन नष्ट भी हो जाता है। उससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप रोते हैं, बिलखते हैं। Depression हो जाता है, आपको। आप आत्म हत्या करने पर तैयार हो जाते हैं। आज का दिवस जहां धन की उपासना, मां लक्ष्मी की उपासना होती है, उसके साथ साथ मां सरस्वती की उपासनी भी अनिवार्य ढंग से

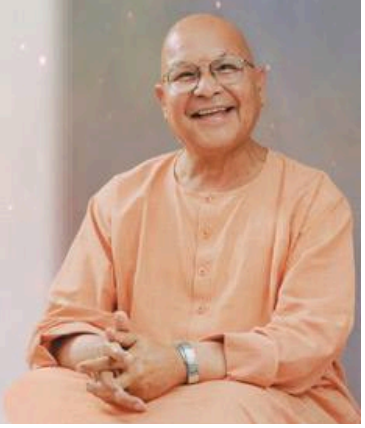

करनी चाहिये। मातेश्वरी ! बोध दे, यह धन जो है हमारे बन्धन का कारण न बने, बल्कि इसका सदुपयोग होना चाहिये। यह हमें तू ही बतायेगी यह तेरी कृपा के बिना नहीं हो सकेगा। धन को मोक्ष का साधन भी बनाया जा सकता है। जहां यह बन्धन का कारण है, वहां यह मोक्ष का साधन भी बनाया जा सकता है। इसे देने के लिये, इसे दूसरों के लिए प्रयोग किया जाये, तो यह मोक्ष का साधन बन जाता है। कलियुग में दान का बढ़ा महत्व है। आज का दिन यही आपको याद दिलाता है कि उस धन को भी एकत्रित करिये जिसे 'नाम धन ' राम नाम धन कहा जाता है। जो किसी के पास नहीं जाता है। आप की पूंजी है। आपके साथ ही रहेगा। आपके साथ ही जायेगा। इसे आपसे कोई नहीं छीन सकता। बहुत से तांत्रिक, बहुत से मन्त्रयोग के उपासक, आज के दिन को मन्त्र सिद्धि के लिये भी प्रयोग करते हैं। आज जितना इस मन्त्र का आप जाप करियेगा, राम नाम का जाप करिये, उतनी ही सिद्धि होने की संभावना बढ़ती है। आज का दिन इस लिये बहुत मांगलिक। आज अमावस की रात को, बहुत से तांत्रिक, यांत्रिक लोग अपने घरों में नहीं मिलेंगे। कोई शमशान घाट में बैठा हुआ है। कोई पानी में खड़ा हुआ है। कोई कहीं गया हुआ है। सब अपने मन्त्रों को सिद्ध करने में लगे हुए हैं। जिन्होंने ने मन्त्र सिद्ध किये हुए हैं, साल भर बहुत कुछ हो जाता है। आज के दिन उन्हें पुनः सिद्ध करने के लिए आज का दिन प्रयोग किया जाता है। बिल्कुल उसी प्रकार की साधना की जाती है, जो सिद्ध करने के लिये की थी। आज का दिन बहुत महत्वशाली दिन है। आपको पुनः बधाई देता हूं। दो दिन तो हो गये। आज बीच का दिन है। कल के दिन को **नूतन वर्ष** भी माना जाता है। साल भर में जो कुछ किया है उसका विश्लेषण करके, सिंहावलोकन (retrospection) करके देखें कि क्या हुआ है और कल से ऐसे संकल्प लेने का दिन – किसी का बुरा नहीं करेंगे। बुरा नहीं कहेंगे। मन से, कर्म से, वचन से, किसी का अनिष्ट न हो ऐसे संकल्प, संयमी जीवन बितायेंगे, पवित्र जीवन बितायेंगे। बेईमानी, चोरी इत्यादि छोड़े देंगे इत्यादि इत्यादि। इन सबका सिंहावलोकन करके तो नई शपथ लेने की आवश्यकता है। जब व्यक्ति नया संकल्प लेता है, तो उसके लिये व्यक्ति को, माता पिता की, गुरुजनों के आशीर्वाद की आवश्यकता हुआ करती है। ताकि यह संकल्प हमारा निर्विघ्न सम्पन्न हो सके। कल का दिन इसके लिए भी माना जाता है।

इस पर्व का अन्तिम दिवस है जिसे **भईया दूज** भी कहा जाता है। भाई बहन के प्रेम की पवित्रता का याद दिलाने का दिवस। इस दिन बहनें अपने भाइयों के मस्तक पर तिलक लगाती हैं। उनको आशीर्वाद देती हैं। उनके लिये शुभ मंगल कामनायें करती हैं। दीर्घ आयु के लिये, यशस्वी बनें, बुद्धिशाली बने इत्यादि इत्यादि। मानों अपने पवित्र सम्बन्ध का याद उन्हें दिलाती हैं।

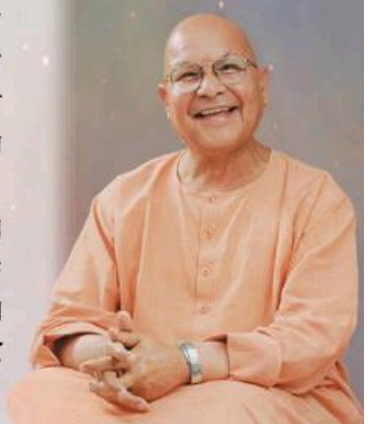

तो आज का दिन सभी मिल मंगल गायें रे, अवध में राम आये हैं। परमेश्वर से यह याचना करने की आवश्यकता है, कि हे परमेश्वर, सर्वप्रथम तो इस अन्तःकरण को अवध बनाओ, तभी तो आप आओगे, वरना आप लंका चले जाते हो, दूर चले जाते हो। समुद्र के किनारे चले जाते हो, जंगल में चले जाते हो। अवध जब अवध बनेगा, तभी आप वहां पधारोगे। आप अवतरित ही महाराज अवध में ही हुए हैं, रहे भी अवध में ही। हज़ारों वर्षों तक वहीं पर राज्य किया है। वहां से कहीं सूचना नहीं मिलती, पढ़ने में नहीं आता कि आप कहीं बाहर गये हैं। तो इस आदर से राम को बुलाना है तो पहले राम जी से कहियेगा। प्रभु इसे अवध बनाओ। तभी तो आप आओगे। वैसे तो सुनकर, पढ़ कर बड़ी सांत्वना, मिलती है कि राम भले ही अवतरित होते हैं, अवध में, रहते भी हैं अवध में, पर लंका में भी चक्कर लगाते हैं। तुलसी दास ने कहा, महाराज ! यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होती है। तुलसीदास से जब पूछा की आपको मेरी लंका के रुप में क्या चीज़ ऐसी अच्छी लगी तो तुलसी कहते हैं, जो लंका का रूप था वह मेरे हृदय में बस जाय। अरे मैं तो शहनशाहों को शहनशाह हूं। देखो मेरा अयोध्या में रूप देखो, वन में रूप देखो, जनकपुरी में रूप देखो । "नहीं महाराज वो लंका में रूप था वह कमाल का रूप था। वह मेरे अन्तःकरण में, हृदय में बस जाय।" तुलसीदास कहते हैं, महाराज ! आप का रूप देखने के लिये अयोध्या में, अन्तकरण को अयोध्या बनाना पड़ेगा। जनकपुरी में आपका रूप निहारने के लिये अन्तकरण को जनकपुरी बनाना पड़ेगा। परन्तु, लंका बनाने की आवश्यकता नहीं। मेरा अन्तःकरण तो लंका ही बना पड़ा है। परमेश्वर से प्रार्थना करो, परमात्मदेव कुछ भी है भले ही आप लंका में पधारते हैं, थोड़े समय के लिए। थोड़े समय में पधारने से हमारा मन नहीं भरता। हमारे अन्तःकरण में प्रभु सदा विराजियेगा। और हमारे इस अन्तकरण को अयोध्या बनाईयेगा। जनकपुरी में भी आप थोड़ी देर के लिये गये, माता सीता को साथ ले कर आ गये। उसके बाद कभी आपने चक्कर लगाया है, नहीं लगाया है। वह हमें नहीं पता। लेकिन अयोध्या में प्रमाणित है कि आप बहुत देर तक रहे हैं। बस हमारे अन्तःकरण को अयोध्या बना दें प्रभु। इस अन्तःकरण में निवास कीजियेगा। मेरे राम ! अपने नाम के प्रकाश से, अपने नाम के प्रकटन से परमेश्वर, इस अन्तःकरण में जन्म जन्मान्तरों से अन्धकार जो जमा पड़ा है, आज उसे दूर कर दीजियेगा प्रभु। बहुत बहुत बधाई साधक जनों आज के शुभ दिवस पर। पुनः बार, बार बधाई। आप को कोटि कोटि प्रणाम।

* *